International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यूनानी नीतिशास्त्र

डॉ.सुमित्रा चारण
व्याख्याता,दर्शनशास्त्र विभाग
राजकीय डूंगर महाविधालय,बीकानेर(राज)

यूनानी नीतिशास्त्र का प्रारम्भ ईसा से 600 वर्ष पूर्व 'थेलीज' नामक नीतिशास्त्री के विचारों से हुआ है। यूनानी नीतिशास्त्रों के सम्पूर्ण विकास को निम्नलिखित 3 भागों में बाँटा जा सकता है

- सुकरात से पूर्व
- सुकारातकालीन नीतिशास्त्र
- सुकरात के बाद

- सुकरात से पूर्व यूनानी नीतिशास्त्र – सुकरात से पूर्व यूनानी नीतिशास्त्र 'सोफिस्टो' के विचारों पर आधारित था।सोफिस्ट यूनान में अध्यापकों का एक वर्ग था।सोफिस्टो का मूल कार्य था यूनान की जनता को सफल जीवन जीने के नये–नये मार्ग बताना।यूनान में सभी सोफिस्टों के विचार एक जैसे नहीं थे क्योंकि उस समय यूनान–एथेन्स–स्पार्टा दो नगर राज्यों में विभक्त था और वहाँ की जनता अलग–अलग दृष्टिकोण रखती थी।सोफिस्टो के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त थे सन्देहवाद,व्यक्तिनिष्ठवाद और सापेक्षतावाद ।इन सभी का विस्तृत वर्णन निम्नलिखित अनुसार है–

- सन्देहवाद – यह ऐसा दार्शनिक सिद्धान्त है जो किसी विषय में निश्चित ज्ञान प्रदान नहीं करता।
- व्यक्तिनिष्ठवाद – इस सिद्धान्त के अनुसार किसी वस्तु की विशेषता पर निर्भर है। इसी कारण प्रोटेगोरस नामक सोफिस्ट ने कहा – व्यक्ति ही सभी वस्तुओं का मापदण्ड है।
- सापेक्षतावाद – इस सिद्धान्त के अनुसार कोई वस्तु एक दृष्टिकोण से यदि सत्य है तो दूसरे दृष्टिकोण से असत्य है। इस प्रकार उसकी सत्ता सापेक्ष है।

- सुकरातकालीन यूनानी नीतिशास्त्र – सुकरात ने सोफिस्टो की आलोचना करते हुए यह कहा कि ज्ञान वस्तुनिष्ठ, निश्चित और निरपेक्ष होता है। सुकरात ने अपने उपदेश मौखिक रूप से प्रदान किये। बाद में सुकरात के शिष्य प्लेटो ने अपनी पुस्तकों में अपना पक्ष सुकरात नामक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पात्र के माध्यम से प्रस्तुत किया।सुकरात के दार्शनिक चिन्तन को निम्नलिखित शीर्षकों में व्यक्त किया जा सकता है –

- ज्ञान ही सद्गुण है – यूनानी नीतिशास्त्र में चार प्रकार के सद्गुण या अच्छे आचरण प्रचलित थे, ये हैं – विवेक (ज्ञान), साहस, संयम और न्याय। यूनान में इन सभी सद्गुणों को समान स्तर का समझा जाता था किन्तु सर्वप्रथम सुकरात ने यह बताया कि वास्तविक दृष्टि से तो केवल एक ही सद्गुण है और वह है ज्ञान।
- बुराई अनैच्छिक है – सुकरात के अनुसार एकमात्र ज्ञान ही सद्गुण है और ज्ञान होने पर कोई भी व्यक्ति बुरा कार्य नहीं करता। कोई व्यक्ति यदि बुरा कार्य करता है तो इसका यही अर्थ है कि उस व्यक्ति को उस कार्य के दोषों की जानकारी नहीं है, इस प्रकार बुराई अनैच्छिक है। सिद्धान्त स्वीकार करने योग्य नहीं है।
- सद्गुणों की एकता – सुकरात के अनुसार सभी सद्गुणों की प्राप्ति अलग–अलग करने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम केवल ज्ञान ही प्राप्त कर लें तो अन्य सद्गुण स्वतः ही हमारे पास आ जायेंगे। यही सिद्धान्त सद्गुणों की एकता का सिद्धान्त कहलाता है।
- सुकरात के सुख–शुभ सम्बन्धी विचार – सुकरात ने सुख तथा शुभ सम्बन्धी निश्चित विचार नहीं दिये। सुकरात जीवन का लक्ष्य सुख को मानता है किन्तु वह सुख के शारीरिक रूप की अपेक्षा उसके मानसिक रूप अर्थात् आनन्द का समर्थन करता है।सुकरात के अनुसार शारीरिक सुख वे होते हैं जो किसी अतृप्त भावनाओं के कारण उत्पन्न होते हैं और उस भावना की तृप्ति होने पर हमें उससे सम्बन्धित सुख का अनुभव होता है जबकि इसके विपरीत मानसिक सुख के लिये किसी भी अतृप्त इच्छा का होना आवश्यक नहीं है। इसे ही आनन्द कहते हैं।
- सुकरात की विधि – सुकरात ज्ञान प्राप्त करने के लिये एक नवीन विधि प्रस्तुत करते हैं। इस नवीन विधि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

  - प्रश्नोत्तर विधि – सुकरात की विधि का मुख्य उद्देश्य लोगों को स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना था। इसलिये वे किसी भी विषय पर उनसे प्रश्न पूछते और लोगों द्वारा दिये जाने वाले उत्तर से सत्य ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते थे।
  - द्वन्द्वात्मक विधि – इस विधि में किसी भी विषय–वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता था। इस विधि के प्रमुख चरण है –वाद (पक्ष), प्रतिवाद (विपक्ष) एवम् संवाद (निष्कर्ष)।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- सुकरातीय व्यंग्य विधि – सुकरात अपनी विधि में अपने व्यक्तिगत ज्ञान को छुपाकर रखता था और जब लोग किसी प्रश्न का उत्तर गलत देते थे तो वह अपने ज्ञान को प्रस्तुत कर देता था। सुकरात के इस कृत्रिम अज्ञान को सुकरातीय व्यंग्य कहते हैं। आलोचक कहते हैं कि सुकरात का उद्देश्य लोगों का मजाक उड़ाना था किन्तु सुकरात का वास्तविक उद्देश्य लोगों को अपने व्यक्तिगत प्रयासों से ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना था।
- निगमात्मक विधि – जब सामान्य से विशेष की ओर ज्ञान प्राप्त किया जाता है अर्थात् किसी सिद्ध नियम को किसी व्यक्ति विशेष या परिस्थितियों के सन्दर्भ में लागू किया जाता है तो इसे निगमन कहते हैं।
- आगमन विधि – जब विशेष से सामान्य नियम की ओर चिन्तन किया जाता है तो इसे आगमन विधि कहते हैं। आगमन विधि में अनेक उदाहरणों को एकत्र किया जाता है, जिनमें परस्पर समानता हो। इन उदाहरणों के लिये एक सामान्य निष्कर्ष या नियम बना दिया जाता है।
- विश्लेषणात्मक विधि – इस विधि में किसी विषय–वस्तु को टुकड़ों में विभाजित करके उसका अध्ययन किया जाता है। उदाहरण – राजस्थान का भौगोलिक अध्ययन तो वन को अलग पढ़ाना, जलवायु अलग पढ़ाना, खनिज अलग पढ़ाना, अपवाह अलग पढ़ाना आदि। (एक विषय–वस्तु को टुकड़ों में विभाजित करना है)
- संश्लेषणात्मक विधि – किसी विषय–वस्तु के छोटे–छोटे अवयवों को जोड़कर ज्ञान प्राप्त करना संश्लेष्णात्मक विधि है –

- सुकरात के अनुयायी–सुख (शारीरिक सुख/भौतिक सुख) तथा आनन्द (मानसिक सुख) के सम्बन्ध में सुकरात के विचार स्पष्ट नहीं थे। इस कारण उसके अनुयायी दो भागों में बँट गये –

- सैरेनेक्स
- सिनिक्स
- सैरेनेक्स – इस सम्प्रदाय के जनक अरिस्टपस माने जाते हैं, जो यूनान के सिरीन नगर के रहने वाले थे। इस सम्प्रदाय की प्रमुख मान्यताएँ निम्न है –
  - मनोवैज्ञानिक सुखवाद – यह सिद्धान्त मानव स्वभाव का वर्णन करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य का स्वभव ही कुछ ऐसा होता है कि वह सदैव सुख की खोज करता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रहता है। यह मानव स्वभाव ही है कि उसे सुख तो अच्छा लगता है और वह दुःख से सदैव दूर भागता है।

- नैतिक सुखवाद – इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को वही कार्य करना चाहिये, जिससे उसे अधिकतम सुख मिले। इस सिद्धान्त के अनुसार जिस कार्य से व्यक्ति को अधिकतम सुख मिले वह कार्य शुभ है और जिस कार्य से व्यक्ति को दुःख मिले, वह कार्य अशुभ है।ज्ञात हो कि नैतिक सुखवाद मनोवैज्ञानिक सुखवाद पर आधारित है।
- स्थूल तथा अपरिष्कृत सुखवाद – सेरेनेक्स के अनुसार सभी भौतिक सुख मानसिक सुखों से श्रेष्ठ है। इसलिये इनका सिद्धान्त स्थूल और अपरिष्कृत सुखवाद कहलाता है।
- तात्कालिक सुख को प्रधानता – सेरेनेक्स दार्शनिक केवल वर्तमान के सुख को ही प्रधानता देते हैं। इनके अनुसार भविष्य में मिलने वाले अनिश्चित सुख की अपेक्षा वर्तमान का अल्पसुख सर्वश्रेष्ठ है।

- सिनिक्स सम्प्रदाय – सुकरात के अनुयायियों का दूसरा वर्ग सिनिक्स कहलाता है। इसकी स्थापना एन्टैस्थेनीज और डोजिनस ने की थी। इस सिद्धान्त की प्रमुख मान्यताएँ हैं –
  - कठोर वैराग्यवाद – इस सिद्धान्त के अनुसार जीवन के लिये सुख की कोई आवश्यकता नहीं है।सिनिक्स सम्प्रदाय मानता है कि पीड़ा या दुःख सद्गुण युक्त जीवन के लिये आवश्यक है।
  - विशुद्ध बुद्धिवाद – यह सिद्धान्त केवल बुद्धि को ही महत्त्व देता है और यह मानता है कि व्यक्ति को अपने सभी संवेगों का दमन कर देना चाहिये और बुद्धि के नियन्त्रण में कठोरता पूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये।
  - विश्व नागरिकता का प्रतिपादन – सिनिक्स की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होने यूनान जैसे देश में जहाँ दो नगर राज्य एथेन्स एवम् स्पार्टा निरन्तर लड़ते रहते थे, वहाँ विश्व नागरिकता का समर्थन किया।

- प्लेटो का नैतिक दर्शन – सुकरात के शिष्य प्लेटो ने अपनी समस्त पुस्तके संवाद या डायलॉग शैली में लिखी है, जिनकी कुल संख्या 36 है, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है 'रिपब्लिक'। प्लेटो ने अपने विचार अपनी पुस्तकों में सुकरात नामक पात्र के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- मुख्य सद्गुण का सिद्धान्त – प्लेटो के अनुसार व्यक्ति के जीवन में चार सद्गुण महत्त्वपूर्ण होते हैं –1.विवेक 2.साहस 3.संयम 4.न्याय।प्लेटो इन चारों को सामूहिक रूप से मुख्य सद्गुण कहता है।प्लेटो ने अपने नीतिशास्त्र में इन मुख्य सदगुणों को व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक दो रूपों के माध्यम से स्पष्ट किया था –
  - मुख्य सद्गुणों का व्यक्तिगत रूप – प्लेटो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में विवेक, साहस और संयम तीनों गुण भिन्न–भिन्न मात्रा में पाये जाते हैं और इनमें से किसी एक गुण की प्रधानता के आधार पर व्यक्ति विवेकी (ज्ञानी), साहसी एवम् संयमी होता है। जब व्यक्ति में इन तीनों गुणों का समन्वय हो जाये तो इसे व्यक्तिगत न्याय कहते हैं।
  - प्लेटो के अनुसार सार्वजनिक न्याय – जब तीनों वर्ग मुख्य सद्गुणों के अनुसार प्राप्त अपने कर्त्तव्यपूर्ण निष्ठा के साथ निभाये अर्थात् राज्य प्रशासन का कार्य करे, सैनिक देश रक्षा का कार्य और उत्पादक वर्ग विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करे तथा एक–दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप न करे तो इसे ही सार्वजनिक न्याय कहते हैं।
- प्लेटो की पूर्णतावाद – सुकरात के अनुयायी सेरेनेक्स तथा सिनिक्स के मध्य यह विवाद था कि जीवन का लक्ष्य सुख है या दुःख।प्लेटो ने सुकरात की वास्तविक शिक्षा को प्रस्तुत कर इस समस्या का समाधान किया।प्लेटो के अनुसार जीवन का लक्ष्य मानसिक सुख है, जिन्हें सुकरात ने आनन्द कहा था। प्लेटो का यही दृष्टिकोण पूर्वतावाद कहलाता है।
- निरपेक्ष शुभ का प्रत्यय – प्लेटो के अनुसार जीवन का लक्ष्य निरपेक्ष शुभ की प्राप्ति है और इसे विवेक (ज्ञान) के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

- अरस्तू का नीतिशास्त्र–अरस्तू प्लेटो के शिष्य थे और प्लेटो द्वारा स्थित एकेडमी में अध्ययन करते थे।अरस्तू ने नीतिशास्त्र पर निकोमेकियन एथिक्स नामक ग्रंथ लिखा।अरस्तू के नीतिशास्त्रीय विचारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है –

- सद्गुण का सामान्य अर्थ – सद्गुण का अर्थ है मनुष्य के वे कार्य को करने में व्यक्ति की सहायता करते हैं और जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को आनन्द की प्राप्ति होती है।यूनानी नीतिशास्त्र में सर्वप्रथम अरस्तू ने ही सद्गुण को परिभाषित किया और कहा – सद्गुण व्यक्ति की ऐसी स्थायी मानसिक अवस्था है जो निरन्तर अभ्यास स्वरूप उत्पन्न होती है तथा जिसका निर्धारण बुद्धि करती है।सद्गुण हमारे ऐच्छिक कर्मों में व्यक्त होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- सद्गुण की विशेषता – अरस्तू के अनुसार सद्गुण जन्मजात नहीं होते बल्कि इन्हें निरन्तर किये जाने वाले अभ्यास अथवा आदत द्वारा सीखा जा सकता है।अरस्तु के अनुसार व्यक्ति में सक्षम साहस का सद्गुण निरन्तर युद्धों में भाग लेने से होता है और यही तथ्य अन्य सद्गुणों पर लागू होते हैं।अरस्तू के अनुसार सद्गुण व्यक्ति के ऐच्छिक कर्मों में व्यक्त होता है।
- अरस्तू के अनुसार सद्गुणों के प्रकार – अरस्तू ने सद्गुण के दो भेद माने हैं और उनके नाम है बौद्धिक तथा नैतिक सद्गुण।
  - बौद्धिक सद्गुण – अरस्तु के अनुसार बौद्धिक सद्गुण वे है जिनमें बुद्धि की प्रधानता होती है और भावनाओं की अनुपस्थिति ।अरस्तु के अनुसार केवल विवेक या ज्ञान ही बौद्धिक सद्गुण है क्योंकि इसकी प्राप्ति बुद्धि नामक शक्ति द्वारा होती है।
  - नैतिक सद्गुण – ये वे सद्गुण है जो मुख्य रूप से मनुष्य की भावनाओं तथा संवेगों द्वारा संचालित होते हैं। जैसे – साधन, संयम, न्याय, मैत्री, उदारता आदि।

प्लेटो और अरस्तू के सद्गुण विचार में भेद – प्लेटो के अनुसार साहस, संयम और न्याय जैसे सद्गुण पूर्ण रूप में प्रदर्शित किये जाये किन्तु अरस्तू का मानना है नैतिक सद्गुण का प्रयोग समय और परिस्थिति के अनुसार किया जाना चाहिये। जैसे – साहस का प्रयोग युद्ध के समय किया जाये, संयम का प्रयोग तब किया जाये जब वह किसी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक हो, न्याय का प्रयोग तब किया जाये जब कहीं अन्याय हो रहा हो।

- अरस्तू का न्याय सम्बन्धी दृष्टिकोण – अरस्तू के अनुसार सामाजिक सम्बन्धों में निष्पक्षता की स्थापना करना न्याय कहलाता है। जिसके दो भेद है –
  - वितरणात्मक न्याय – वितरणात्मक न्याय का अर्थ है कि राज्य द्वारा अपने नागरिकों में सम्पत्ति तथा पदों का वितरण उनकी योग्यता के अनुसार किया जाना चाहिये।
  - प्रतिकारात्मक न्याय– प्रतिकारात्मक न्याय मुख्य रूप से कानून पालन से जुड़ा हुआ है। यह न्याय कानून का उल्लंघन करने वाले को दण्डित करता है तथा प्रभावित व्यक्ति को क्षतिपूर्ति प्रदान करता है।
- मध्यम मार्ग का सिद्धान्त – नैतिक सद्गुणों के स्वरूप के सम्बन्ध में अरस्तू के मध्यम मार्ग का सिद्धान्त दिया। अरस्तू कहता है कि प्रत्येक सद्गुण दो अतिवादी दृष्टियों के मध्य का मार्ग है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- जीवन का लक्ष्य – प्लेटो के विपरीत अरस्तू यह मानता है कि परम शुभ इसी जगत में प्राप्त किया जा सकता है और उसकी प्राप्ति का मार्ग है बौद्धिक सद्गुण के नेतृत्व में सुख की प्राप्ति जिसे आनन्द कहते हैं।
- सुकरात के बाद यूनानी नीतिशास्त्र – इस काल में यूनानी नीतिशास्त्र में दो विचारधाराएँ अस्तित्व में आयी जो क्रमशः सेरेनेक्स और सिनिक्स से प्रभावित थी और ये विचारधाराएँ है –

1. ऐपिक्यूरिनवाद 2.स्टोइकवाद

➢ ऐपिक्यूरिनवाद – यूनानी नीतिशास्त्र में इस विचारधारा के प्रवर्तक ऐपिक्यूरियस थे जो सेरेनेक्स सम्प्रदाय से प्रभावित थे। इस सिद्धान्त की प्रमुख मान्यताएँ है –

✓ मनोवैज्ञानिक सुखवाद का समर्थन

✓ नैतिक सुखवाद का समर्थन

✓ परिष्कृत सुखवाद – सेरेनेक्स के विपरीत ऐपिक्यूरियनवाद भौतिक सुखों की ऐपेक्यूरियस के अनुसार मनुष्य की दो प्रकार की आवश्यकताएँ होती है – स्वाभाविक और कृत्रिम आवश्यकताएँ। इनमें से प्रथम आवश्यकता है जीवन को बचाये रखने के लिये आवश्यक और द्वितीयक आवश्यकताएँ जीवन को सुन्दर बनाये रखने के लिये आवश्यक है, इनमें से प्रथम आवश्यकता ही पालन योग्य है।

➢ स्टोइकवाद – इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 'जेनो' है। जेनो द्वारा संचालित स्कूल 'स्टोइक्स' कहलाते थे। इसी कारण इनका दर्शन स्टोइकवाद कहलाया। स्टोइकवाद सिनिक्स सम्प्रदाय से प्रभावित था और इनकी प्रमुख मान्यताएँ है –

✓ सिनिक्स से प्रभावित होने के कारण स्टोइकवाद सुख और आनन्द को कोई महत्त्व नहीं देता बल्कि इसके अनुसार जीवन का लक्ष्य निष्काम भाव से कर्त्तव्य पालन है।

✓ स्टोइकवाद के अनुसार व्यक्ति को सुख–दुःख में समान दृष्टिकोण अपनाना चाहिये अर्थात् उसे दोनों से ही प्रभावित नहीं होना चाहिये, इसे ही गीता में 'स्थित प्रज्ञ' कहा गया है।

✓ बुद्धिवाद का समर्थन

✓ सर्वेश्वरवाद का समर्थन – स्टोइकवाद के अनुसार इस जगत में जो कुछ है वह ईश्वर का ही रूप है। इस प्रकार ईश्वर जगत है और जगत ईश्वर है। यही सिद्धान्त सर्वेश्वरवाद कहलाता है।

✓ विश्व नागरिकता का समर्थन ।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.या.मसीह,पाश्चात्य दर्शन समीक्षात्मक इतिहास

2.डॉ. शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण(थेलिस से हीगल तक)

3.डॉ. नित्यानंद मिश्र,समकालीन पाश्चात्य दर्शन

4.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

5.चन्द्रधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन

6.डॉ.शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय

7.हरिशंकर उपाध्याय,पाश्चात्य दर्शन का उदभव और विकास

8.नरेश प्रसाद त्रिपाठी,भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन

9.फ्रैंक थिली,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

10.प्रो.दयाकृष्ण,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

11.डॉ.ब्रहमस्वरूप अग्रवाल,पाश्चात्य दर्शन

12.डॉ.जगदीशचन्द्र जैन,पाश्चात्य समीक्षा दर्शन

13.डॉ.शशी भार्गव,पाश्चात्य दर्शन

14.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

15.डॉ.वेदप्रकाश वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा

16.डॉ. वेदप्रकाश वर्मा,दर्शन विवेचना

17.अम्बिकादत शर्मा,समेकित पाश्चात्य दर्शन समीक्षा

18.गुलाबराय,पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास

19.शंशधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

20.अशोक कुमार वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा(पाश्चात्य और भारतीय)

21.डॉ.नित्यानंद मिश्र,नीतिशास्त्रःसिद्धान्त और व्यवहार

22.सुधा चौधरी,नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार